•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ में

उसर बना उर्वर : लहलहाई धर्म की फसल

२१ अप्रेल २०११। आज परमाराध्य आचार्यप्रवर समीचा के शान्ति भवन से प्रस्थान कर अनेक घरों को स्पर्श करते हुए समीचा के ही उच्च राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। यहां स्थानीय तेरापंथ सभा द्वारा निर्मित हॉल के लोकार्पण के बाद पूज्यवर ने उसर की ओर प्रस्थान किया। दोनों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ मार्ग रमणीय और मनोरम था। महुआ बीनते हुए आदिवासी भील आचार्यवर के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। आचार्यवर ने कई स्थानों पर कुछ क्षण रुक कर प्राकृतिक छटा पर दृष्टिपात किया। मुम्बई महानगर के प्रवासी लोग इस इलाके को 'टेन्सन फ्री जोन' कहते हैं, क्योंकि यहां नेटवर्क के अभाव में मोबाइल सेवाएं ठप्प रहती हैं। शान्तिपूर्ण और सौन्दर्ययुक्त मार्ग से लगभग ३.५ किमी. का विहार कर आचार्यवर उसर के जैन भवन में पधारे। गांव के सरपंच श्री रमेश नबेड़िया आदि ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। स्थानीय लोगों में हर्ष और उल्लास का वातावरण था। आचार्यवर की कृपावृष्टि से उसर में आज जैसे धर्म की फसल लहलहा उठी।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व कुम्भलगढ़ विधायक श्री गणेशसिंह परमार, पूर्व सिंचाई मंत्री श्री सुरेन्द्रसिंह राठौड़ सहित अनेक लोगों ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। श्री मेघराज बनेड़िया ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'लोभ के कारण व्यक्ति अनेक अपराध कर लेता है। परिवार में कलह और बिखराव का कारण भी ज्यादातर लोभ ही होता है। हम अपनी साधना के द्वारा लोभ को पुष्ट करने वाले स्वार्थ को छोड़कर शुद्ध परार्थ और परमार्थ की दिशा में आगे बढ़ें।'

उसर आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम उसर आए हैं। विहार छोटा था, किन्तु मार्ग मनोरम था। यह इलका प्राकृतिक सौन्दर्य से समृद्ध है। इस मार्ग के प्राकृतिक दृश्यों को देखकर छद्‌मस्थ के मन में रागोत्पत्ति संभव है। गांव का नाम उसर है, किन्तु यह धरती उर्वरा लग रही है। केवल धरती ही नहीं, हमारा मस्तिष्क भी उर्वर बने।'

आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात पेसिफिक यूनिवर्सिटी, उदयपुर के सेक्रेट्री श्री राहुल अग्रवाल, वाइस चांसलर श्री बी.एल.शर्मा आदि पूज्यवर के उपपात में पहुंचे और विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। मध्याह्न में राजस्थान सरकार के खेल एवं युवा राज्यमंत्री श्री मांगीलाल गरासिया, कुंभलगढ़ तहसील प्रधान श्री सूरजसिंहजी आदि भी श्रीचरणों में उपस्थित हुए।

उसर में १९ तेरापंथी परिवार हैं। रात्रिकालीन प्रवचन के पश्चात पूज्य आचार्यवर ने उन्हें पारिवारिक सेवा का अवसर प्रदान किया। पूज्यवर ने सभी परिवारों को प्रेरणा-पाथेय प्रदान किया। सेवा के दौरान महिलाओं ने आचार्यवर से निवेदन किया--'भगवन् ! हम बहुत दुःखी हैं।' पूज्यवर के पूछने पर उन्होंने बताया--'हम शारीरिक, मानसिक, आर्थिक आदि सभी दृष्टियों से दुःखी हैं। हमने कभी सुख देखा ही नहीं।' पूज्यप्रवर ने उन्हें मनोबल और समभाव रखने तथा **'ओम् भिक्षु'** और **'अ.भि.रा.शि.को.नमः'** मंत्र का जप करने की प्रेरणा प्रदान की।

सेवा समाप्ति के पश्चात स्थानीय सरपंच श्री रमेश नबेड़िया आदि ग्रामवासियों ने पूज्यवर से निवेदन किया--'इस ग्राम के प्रायः निवासी दुःखी हैं। आप कृपा कर गांव का नाम बदल दें।' ग्रामवासियों के अनुरोध पर आचार्यवर ने उन्हें 'उर्वर' नाम सुझाया। ग्रामवासी सविनय कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए बोले--'हम इस नाम को सरकारी स्तर पर लागू करवाने का भी प्रयास करेंगे।' आचार्यवर ने उन्हें गांव में प्रतिदिन उपवास और आधा घंटा जप की बारी चलाने की भी प्रेरणा दी।

पावन हुआ वन

२२ अप्रेल। आज प्रातः उर्वर गांव के अनेक घरों का स्पर्श करते हुए आचार्यवर ने लखमावतों का गुड़ा गांव की ओर विहार किया। पहाड़ों की तलहटी में अवस्थित सघन वृक्षों की डाल पर बैठे तोते और कोयलें अपनी मधुर स्वर-लहरियों से मानो पूज्यवर का अभिनंदन कर रही थीं। झींगुरों की तीखी, किन्तु कर्णप्रिय झंकार राहगीरों का ध्यान अनायास ही आकृष्ट कर रही थीं। वृक्षों की डालियों पर लंबी छलांग लगाते उद्दण्ड लंगूरों की टोली भी क्षण भर के लिए रुक कर अहिंसा यात्रा महापथिक और उसके कारवां को कुतूहल भाव से निहार रही थी। उबड़-खाबड़ पथरीली भूमि पर किसान बैलों द्वारा खेतों की जुताई में संलग्न थे। प्रकृति के प्रांगण में बने इस मार्ग पर वाहनों का आवागमन कम होने के कारण प्रदूषण यहां से कोसों दूर है। आचार्यवर ने कुछ क्षण रुक कर पहाड़ी दर्रों के बीच होने वाली खेती और विभन्न नए वृक्षों के संदर्भ में अवगति प्राप्त की। मार्गवर्ती जर्फा पीपला गांव में स्थानीय लोगों ने सेवार्थियों का इक्षुरस के द्वारा आतिथ्य किया। आचार्यवर ने यत्र-तत्र अपने चरण रोक कर ग्रामीणों से बात की और उन्हें धार्मिक संबोध प्रदान किया। इस प्रकार प्रकृति के बीच १०.१ किमी. का विहार कर आचार्यवर लखमावतों का गुड़ा स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। गांव से लगभग १ किमी. दूर वन में अवस्थित यह विद्यालय आचार्यवर के पदार्पण से पावन बन गया। पूज्यवर की इस मेवाड़ यात्रा में संभवतः यह पहला गांव है, जहां जैन समाज का कोई घर नहीं है।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा--'दार्शनिक जगत में आस्तिक और नास्तिक--ये दो विचारधाराएं प्रसिद्ध हैं। आत्मा, पुनर्जन्म, कर्म, मोक्ष आदि का अस्तित्व स्वीकार करने वाले आस्तिक कहलाते हैं। इसके विपरीत नास्तिक आत्मा आदि को नहीं मानते। किन्तु वर्तमान में शान्ति से जीने के लिए नास्तिक भी पापाचरण से बचें।' आचार्यवर ने प्रवचन के मध्य स्वस्थ जीवनशैली के सूत्रों की भी चर्चा की। रात्रिकालीन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को धार्मिक प्रेरणा प्रदान की गई। अनेक ग्रामीणों ने पूज्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

२३ अप्रेल। महातपस्वी आचार्यवर प्रातः लगभग पांच किमी. का विहार कर कुंचोली पधारे। सरपंच श्री मनोहरसिंहजी ने गांववासियों के साथ पूज्यप्रवर की अगवानी की। श्री शंकरलालजी, भंवरलालजी, वरदीचन्दजी केसूलालजी पामेचा परिवार द्वारा पूज्यवर से मंगलपाठ श्रवण कर नवनिर्मित तेरापंथ भवन का लोकार्पण किया गया। आचार्यवर का प्रवास इसी भवन में हुआ। पूज्यवर के पावन पदार्पण से पूरे गांव में हर्ष और उल्लास का वातावरण रहा। कुंचोली में तेरापंथ समाज के उन्नीस घर हैं।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मुख्य नियोजिकाजी और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए। राजस्थान के खेल एवं युवा राज्यमंत्री श्री मांगीलाल गरासिया, विधायक श्री गणेशसिंह परमार आदि ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'परिवारों में स्वर्ग और नरक दोनों तरह का वातावरण देखने को मिल सकता है। जिस परिवार में संप (सामंजस्य) संपत्ति और संस्कार हैं, वह परिवार स्वर्गतुल्य होता है। जहां इन तीनों का अभाव है, वहां नरक का वातावरण देखा जा सकता है। बड़ों के प्रति विनय और सम्मान का भाव पारिवारिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी स्वस्थ वातावरण निर्मित कर सकता है।' सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यवर ने स्थानीय तेरापंथी परिवारों के घरों का स्पर्श किया।

मधुमक्खियों का आक्रमण

२४ अप्रेल। आज प्रातः आचार्यवर ने कुंचोली से दोवास की ओर विहार किया। लगभग चार किमी. ही चले थे कि यात्रा व्यवस्थापक श्री पुखराज दक और श्री हंसमुखभाई मेहता ने सूचना दी आगे मधुमक्खियों का भयंकर उपद्रव हो रहा है। अनेक साधु-साध्वियां उसकी चपेट में आ गए हैं। कार्यकर्ता तत्काल

उस ओर दौड़े और पाया कि देवड़ों की भागल के पास अनेक साध्वियां पहाड़ की तलहटी में मधुमक्खियों से जूझ रही हैं। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी भी इस आतंक से घिरी हुई थीं। विविध उपायों द्वारा मधुमक्खियों को दूर करने का प्रयास किया गया, तब कहीं जाकर मुख्यनियोजिकाजी अपने गंतव्य की ओर बढ़ सकीं, लेकिन तब तक वे कितनी ही मक्खियों के तीक्ष्ण डंक का शिकार बन चुकी थीं। साध्वी सुमंगलप्रभाजी बुरी तरह से जख्मी हुईं। मधुमक्खियों के बैठने से उनका मस्तक छत्ता-सा बन गया। साध्वियों ने जैसे-तैसे उन्हें बचाने का प्रयास किया। बचाने वाली साध्वियों को भी मधुमक्खियों का आक्रोश झेलना पड़ा।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी को वहां पहुंचने से पूर्व ही इस उपद्रव की जानकारी मिल गई। उन्होंने स्वयं को वस्त्रादि से अच्छी तरह से ढक लिया और स्वामीजी का नाम स्मरण करते हुए साधन द्वारा द्रुत गति से सकुशल दूसरे छोर पर पहुंच गईं। तभी रक्षार्थ भागते हुए कार्यकर्ताओं को 'बचाओ-बचाओ' की ध्वनि सुनाई दी। इस आर्तस्वर को सुनकर हेमन्त बैद, बबलू फोटोग्राफर, अमरसिंह सांखला, सिद्धार्थ कंपाउंडर, हनुमानसिंह आदि कार्यकर्ता स्वयं को काटनेवाली मधुमक्खियों की परवाह किए बिना वहां पहुंचे और देखा--झाड़ियों के बीच साध्वी स्वर्णरेखाजी और साध्वी सुधांशुप्रभाजी अनगिनत मधुमक्खियों के आक्रमण से बचने का असफल प्रयास कर रही हैं। उनके प्रबल आक्रमण से दोनों साध्वियों की अपना बचाव करने की क्षमता लगभग क्षीण हो चुकी थी। कुछ आदिवासी कम्बल आदि लेकर दौड़ते हुए आए और उनसे साध्वियों को ढक दिया गया, किन्तु क्रोधित मधुमक्खियों ने शीघ्र ही छिद्रान्वेषण कर इस उपाय को भी लगभग निरर्थक कर दिया। उनके तीक्ष्ण डंक साध्वियों के शरीर को लगातार बींध रहे थे।

कुंभलगढ़ तहसील के उपप्रधान श्री विरधीचन्दजी खरवड़ का पुत्र सोहनसिंह और पहले से वहां उपस्थित कार्यकर्ताओं ने स्वयं को जोखिम में डालकर तत्काल वहां आग जलाकर धुआं किया, किन्तु यह उपाय भी बेअसर साबित हुआ। इस दौरान सोहनसिंह भी बुरी तरह मधुमक्खियों से आक्रान्त हुआ। कंटीली झाड़ियों के कारण उसके चेहरे से खून भी टपकने लगा, किन्तु वह वहां डटा रहा। इसी बीच सूचना मिली साध्वी तन्मयप्रभाजी कहीं बिछड़ गईं। उन्हें आसपास की पहाड़ियों में खोजा गया। आखिर वे सड़क के किनारे एक झोंपड़ी में मिल गईं। वे भी मधुमक्खियों के डंक से प्रभावित थीं।

सूचना मिलने पर केलवाड़ा के डॉक्टर घटनास्थल पर पहुंचे। तब तक मधुमक्खियों का उपद्रव भी कुछ कम हो चुका था। साध्वी स्वर्णरेखाजी आदि दोनों साध्वियां भी लड़खड़ाते कदमों से चलकर रताराम गमेती के घर पहुंचीं। कुछ समय बाद ही वे मूर्च्छित हो गईं। प्रयास के बाद भी साध्वियों की मूर्च्छा नहीं टूटी। डॉक्टरों के परामर्श के अनुसार आचार्यवर से अनापत्ति स्वीकृति प्राप्त कर दोनों साध्वियों को भिन्न सामाचारी में वाहन द्वारा उदयपुर के अमेरिकन हास्पिटल पहुंचाया गया। साध्वी तन्मयप्रभाजी भी उनके साथ गईं। साध्वी आरोग्यश्रीजी और साध्वी संगीतप्रभाजी को पीछे से उनकी सेवा में भेजा गया।

मुनि धर्मरुचिजी, मुनि जंबूकुमारजी, मुनि नयकुमारजी, साध्वी विमलप्रज्ञाजी, साध्वी चित्रलेखाजी, साध्वी शुभ्रयशाजी, साध्वी सविताश्रीजी, साध्वी दर्शनविभाजी, साध्वी सुनंदाश्रीजी, साध्वी अतुलयशाजी आदि साधु- साध्वियां भी मामूली रूप से इस त्रासद घटना के शिकार बने। घटना स्थल से लगभग एक किमी. दूर पूज्य आचार्यवर को कार्यकर्ताओं ने स्थिति की जानकारी देकर वहीं रुकने का अनुरोध किया। पूज्यवर कुछ दूर चलकर सड़क पर विराजमान हो गए। पूज्यवर वहां रुक तो गए, किन्तु आपका करुणार्द्र चित्त आहत शिष्यों की संभाल ले रहा था। आचार्यवर बार-बार साध्वियों की जानकारी लेकर साधुओं और कार्यकर्ताओं को आवश्यक निर्देश दे रहे थे। शिष्यों के प्रति आचार्यवर के अमित वात्सल्य भाव को देखकर उपस्थित जनता अभिभूत थी। आचार्यवर ने यहां साधुओं के साथ 'विघ्नहरण' की ढाल का स्वाध्याय किया। लगभग आधा घंटा बाद पूज्यवर ने वहां से प्रस्थान किया, किन्तु पथ प्रशस्त न होने की सूचना पाकर आचार्यवर एक छायादार आम्र वृक्ष के नीचे विराजमान हो गए। यहां भी पूज्यवर बार-बार साध्वियों की स्थिति की अवगति लेते रहे। कुछ देर बाद आचार्यवर यहां से प्रस्थान कर घटनास्थल के निकट स्थित डा. नरेन्द्रपालसिंह जादनोन के आवास पर पधारे। बिफरी हुई मधुमक्खियां आसपास

अब भी मंडरा रही थीं, किन्तु आचार्यवर सकुशल पहुंच गए। कुछ साध्वियां पहले ही वहां पहुंच चुकी थीं। भयाकुल साध्वियां पूज्य आचार्यवर को अपने बीच पाकर आश्वस्त हुईं। पूज्यवर ने दोवास स्थित साध्वीप्रमुखाजी के नाम संदेश भेजा, जिसमें भिन्न सामाचारी के अंतर्गत उदयपुर भेजी गई पांच साध्वियों की जानकारी दी तथा वहां उपस्थित साध्वीप्रमुखाजी सहित सभी साध्वियों की कुश ालपृच्छा की। साध्वीप्रमुखाजी के यहां से उत्तर प्राप्त हुआ--'गुरुदेव की कृपा से यहां सभी ठीक हैं। घायल साध्वियों का उपचार किया गया है।' आचार्यवर ने वहां न पहुंचनेवाली साध्वियों के नाम पूछे तो वहां से बारह साध्वियों के नाम प्राप्त हुए। स्वयं आचार्यवर ने एक-एक साधु-साध्वी की गणना की। गणना करने पर ज्ञात हुआ कि पांच साध्वियों की जानकारी अभी भी नहीं मिली है। कार्यकर्ता उन्हें ढूंढ़ने आसपास की झोंपड़ियों में गए। थोड़ी देर में ही पांचों साध्वियों के सकुशल दोवास पहुंचने का संवाद मिल गया। मुनि कुमारश्रमणजी और मुनि कीर्तिकुमारजी आचार्यवर के लिए सुरक्षित मार्ग की खोज में गए और लगभग तीन किमी. पहाड़ों में घूमकर पुनः आचार्यवर के उपपात में पहुंचे। उनके द्वारा खोजे गए दुर्गम पहाड़ी मार्ग से लगभग आधा किमी. चलकर आचार्यवर सड़क तक पहुंचे। इस दौरान अनेक मधुमक्खियां काफिले के आसपास मंडराती रहीं, लेकिन आचार्यवर के आभामंडल में सभी सुरक्षित रहे।

लगभग दस किमी. का विहार कर लगभग पौने बारह बजे आचार्यवर दोवास पहुंचे। वहां उपस्थित सभी साधु-साध्वियों की सुखपृच्छा की। उपचार हेतु उदयपुर भेजी गई साध्वियों के भी क्रमशः स्वस्थता के संवाद मिलने लगे। संपूर्ण घटना के दौरान अहिंसा यात्रा के कार्यकर्ता, विभिन्न संघीय संस्थाओं के कर्मचारी, उदयपुर, रींछेड़, कुंचोली, केलवाड़ा, मजेरा आदि क्षेत्रों के कार्यकर्ता सक्रिय रहे। अनेक लोग साध्वियों के उपचार और बचाव के दौरान घायल हुए, किन्तु अपने दायित्व से पीछे नहीं हटे। उपप्रधान श्री वरधीचन्दजी, श्री नाथूसिंहजी आदि ग्रामीणों तथा आसपास के भीलों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। सूचना मिलने पर केलवा प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी के साथ राजनगर से चिकित्सा दल पहुंचा। उन्होंने तथा केलवाड़ा, ओड़ा के डॉक्टरों ने घायल साधु-साध्वियों तथा कार्यकर्ताओं का उपचार किया। अनेक प्रशासनिक अधिकारी भी पहुंचे और व्यवस्थाओं में अपना सहयोग प्रदान किया। परमाराध्य आचार्यवर ने इस घटना के संदर्भ में एक छप्पय की रचना की। वह इस प्रकार है--

कुंचोली दोवास बिच, दुःखद घटा उदन्त।
मधुमक्खी दल आक्रमण, आहत सतियां संत।
आहत सतियां-संत, रुके स्वयं हम पंथ में।
'महाश्रमण' विस्तार, बांचें शासन ग्रंथ में।
यात्रा में आनंद, क्वचित् -कदाचित् कष्ट भी।
यदि आ जाए तो रखें सुदृढ़ आत्मबल हम सभी ॥

सिहरन पैदा करने वाली यह घटना अविस्मरणीय बन गई। दिन भर लोगों के मुख पर इसी घटना की चर्चा रही। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यवर ने मुनि धर्मरुचिजी, मुनि दिनेशकुमारजी और बालमुनि मृदुकुमारजी को साध्वियों के प्रवास स्थल पर भेजकर घायल साध्वियों की सुखपृच्छा की। आचार्यवर की इस कृपावृष्टि से साध्वीवृन्द ने अधिक स्वस्थता की अनुभूति की।

केलवाड़ा में भावभीना स्वागत

२५ अप्रेल। आज प्रातः केलवाड़ा की ओर विहार करते हुए पूज्य आचार्यवर ने मार्गवर्ती काकरवा के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की, उन्हें नशामुक्ति का संकल्प करवाया। काकरवा के ही शंकरजी लुहार के घर में ग्रामीणों के बीच पूज्यवर का संक्षिप्त उद्बोधन हुआ। अनेक ग्रामीण नशामुक्ति हेतु संकल्पित हुए। दस किमी. का विहार कर आचार्यवर केलवाड़ा पधारे। यहां मूर्तिपूजक संप्रदाय के अनेक घर हैं। आचार्यवर के पदार्पण से न केवल जैन समाज में, अपितु माहेश्वरी समाज में भी हर्ष और उल्लास का वातावरण था। आचार्यवर का प्रवास श्री सुरेश ाजी काबड़िया के मकान में

हुआ। काबड़िया परिवार की प्रसन्नता का कोई पार नहीं था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्य आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मुख्य नियोजिकाजी और साध्वीप्रमुखाजी के प्रेरक अभिभाषण हुए। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में इन्द्रिय संयम की चर्चा की और उपस्थित जनता को कल की घटना से अवगत कराया। श्रद्धानिष्ठ कवि श्री माधव दरक आदि स्थानीय लोगों ने पूज्यवर के स्वागत में प्रस्तुतियां दीं।

इतिहास प्रसिद्ध कुंभलगढ़ की ऐतिहासिक यात्रा

२६ अप्रेल। आज केलवाड़ा से विहार करते ही रमणीय पर्वतीय मार्ग शुरू हो गया। थोड़ी-सी चढ़ाई के बाद पहाड़ियों के मध्य पक्की पाल का एक तालाब मिला जो भारत की भौगोलिक स्थिति को खूबसूरती के साथ दर्शा रहा था। उस तालाब को देखकर भारत का नक्शा जैसे आंखों के सामने आ गया। मार्ग में उदयपुर के श्री जितेन्द्र कोठारी के देवी पैलेस में आचार्यवर ने पगल्या किया। उसके पास स्थित श्री फतेहलालजी मेहता के प्रस्तावित होटल के सोलह बीघा भू-भाग पर आचार्यवर के चरण पड़े तो मेहता परिवार प्रफुल्लित हो गया। घने जंगल में एक ओर उत्तुंग पर्वत, दूसरी ओर सैकड़ों फुट विशाल गहरी खाईं के मध्य सर्पाकार सड़क पर गतिमान अहिंसा यात्रा का काफिला पूज्य आचार्यचरण के साथ ओधी होटल पहुंचा। होटल मैनेजर श्री उम्मेदसिंह के नेतृत्व में होटल प्रबंधन ने आचार्यवर का स्वागत किया। आज दिन भर प्रवास यहीं रहा।

सायं लगभग ४.३० बजे आचार्यवर ने कुंभलगढ़ दुर्ग की ओर प्रस्थान किया। न केवल राजस्थान, बल्कि संपूर्ण भारत के विशाल और ऐतिहासिक किलों में इसकी गणना होती है। महाराणा कुंभा द्वारा निर्मित और बाद के महाराणाओं द्वारा संरक्षित और संवर्द्धित इस विशाल दुर्ग की छाती पर समय के अनगिनत घाव अंकित हैं। यह दुर्ग अब भारतीय पुरातत्व विभाग की अमूल्य धरोहर है। अरेट पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, राम पोल, विजय पोल, भैरव पोल, चौगान पोल, पागड़ा पोल होते हुए आचार्यवर ससंघ दुर्ग के शिखर पर स्थित बादल महल पहुंचे। शिखर से दूर-दूर तक दृष्टिगोचर हो रहा था प्रकृति का मनोहारी दृश्य। मारवाड़ के घाणेराव आदि कई क्षेत्र यहां से साफ देखे जा सकते हैं। गाइड श्री कुबेरसिंह सोलंकी ने महाराणाओं की वंशावली सहित इस किले से जुड़ी इतिहास की विश्रुत घटनाओं की कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए बताया 'महाराणा कुंभा ने सन १४४३-१४५८ के मध्य प्रमुख वास्तुविद मदन की देखरेख में इस अजेय दुर्ग का निर्माण करवाया। ईसा पूर्व दूसरी सदी में जैन राजा सम्प्रति के युग में विनिर्मित ३६० मंदिरों में ३०० जैन मंदिर थे। इनमें से कुछ मंदिरों के भग्नावशेष आज भी विद्यमान हैं। जहां तक दुर्ग की प्राचीरों की बात है, चीन की 'ग्रेट वाल' के बाद यह दूसरी दीवार है जो ३६ किमी. लंबी गहरी खाइयों से घिरी हुई है। ६१० वर्ग किलोमीटर में फैले समुद्र तल से ३५०० फुट ऊंचे सात सौ बुर्जों वाले इस दुर्ग की सात मीटर ऊंची व छह मीटर चौड़ी दीवार पर एक साथ आठ घोड़े खड़े हो सकते हैं। महाराणाओं के समय में दो घोड़े गश्त के रूप में समानान्तर दौड़ते रहते थे। बप्पा रावल द्वारा संस्थापित मेवाड़ राज्य के सिसोदिया वंश में अनेक प्रतापी शासक हुए, किन्तु महाराणा सांगा और महाराणा प्रताप की वीरगाथा कालजयी है। समय की गर्दिश आज तक उसे धुंधला नहीं सकी।

रात्रि में लाइट एंड साउंड सिस्टम से कुंभलगढ़ के इतिहास को सिलसिलेवार रोचक प्रस्तुति दी गई। हजारों लोग इस कार्यक्रम के साक्षी बने। आचार्यवर का प्रवास दुर्ग के शिव मंदिर में हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने भी साध्वी परिवार के साथ दुर्ग के अन्य मंदिर में रात्रि प्रवास किया। मंदिर के परकोटे में रात्रि विश्राम के दौरान सांय-सांय करती तेज हवा की आवाज घने जंगल का स्पष्ट अहसास करा रही थी। बताया गया कि इस जंगल में पेंथर, जरख, रींछ आदि अनेक हिंस्र पशुओं का निवास है। कुंभलगढ़ आगमन की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करते हुए पूज्यवर ने एक दोहा फरमाया--

कुंभलगढ़ के दुर्ग का, ज्ञात किया इतिहास।